भ्रष्टाचारः संकल्पना एवं ऐतिहासिक परिदृश्य

डॉ0 सुधीर कुमार
(प्रधानाध्यापक–प्राथमिक विद्यालय, मेरठ)

साराश

भारत में भ्रष्टाचार का इतिहास बहुत पुराना है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही बहुत ऐसे विषय थे, जिनमें खुला भ्रष्टाचार था। जहाँ पहले केवल भ्रष्टाचार लाईसेन्स या परमिट के लिए उपयोग होता था अब जब से देष में वैष्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, विदेशीकरण, बाजारीकरण एवं विनिमय की नीतियों ने अपना स्थान लिया, तभी से देष में घोटालों की बाढ़ सी आ गयी है। इन्हीं के साथ–साथ पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण करते–करते बाजारवाद, भोगवाद, विलासिता आदि का जबरदस्त हमला षुरू हो गया।आज भ्रष्टाचार ही देश की सबसे बड़ी सरकार बन चुकी है। देष पर किसी भी समस्या का इतना दबाव नहीं है, जितना भ्रष्टाचार का है। लोग अब भ्रष्टाचार को अपने निर्यात और जीवन के अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। इसलिए तो इसे आज सामाजिक मान्यता हासिल हो चुकी है वास्तव में भ्रष्टाचार न केवल हमारे मौजूदा लाभ को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि वह देष के नौजवानों के भविष्य की सम्भावनाओं को भी क्षति पहुंचा रहा है। है। देष में आदर्श सोसायटी घोटाला, 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला और कोयला आवंटन घोटाला आदि देष के वो घोटालें है जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है, कि भ्रष्टाचार की जड़े कितनी मजबूत हो गयी है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 सुधीर कुमार,

भ्रष्टाचारः संकल्पना एवं ऐतिहासिक परिदृश्य,

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 36.39,
Artcile No. 7 (SM 467)

http://anubooks.com/?page_id=581

भारत में भ्रष्टाचार का इतिहास बहुत पुराना है। भारत की आजादी के पहले कुछ विदेशी तत्वों ने भारत के सम्पन्न लोगों को आकर्षित करने हेतु पहले धन फिर कुछ अन्य लुभावने प्रकार बताये और सुविधास्वरूप धन भी देना प्रारम्भ कर दिया। धन देकर इन अंग्रेजों वह सब प्राप्त किया जो उन्हें चाहिए था। यह भ्रष्टाचार की नींव उसी समय से डली है जो आज भारत के अंग्रेजों से स्वतंत्र होने पश्चात् भी अपना प्रभाव जमाये हुए है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् ही बहुत ऐसे विशय थे, जिनमें खुला भ्रष्टाचार था। एक विषय था लाईसेन्स व परमिट जहां एक ओर देष अभी–अभी आजाद हुआ देश के लोग अपने–अपने काम धन्धों को तेजी से प्रारम्भ करने की जी–जान से मेहनत कर रहे थे। वहीं दूसरी ओर भारत की आजादी के बाद भी भारत की अर्थ–व्यवस्था राषनिंग, लाईसेन्स, परमिट, लालफीताषाही में जकड़ी रही। तब भी देष की जनता, व्यापारी तथा उद्योगपतियों को घूस देना आवष्यक था। 1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण एवं वैष्वीकरण की विष्वव्यापी राजनीति–अर्थशास्त्र से जोड़ा गया। तब तक सोवियत संघ साम्यवादी महासंघ के रूप में बिखराव भी परिलक्षित होने लगा। सभी देश अपने पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को सुधार करने हेतु प्रयत्नशील थे, तभी चीन ने औद्योगिकरण के रास्ते अपने विकसित रूप को दुनिया के समक्ष रख दिया।

जहाँ पहले केवल भ्रष्टाचार लाईसेन्स या परमिट के लिए उपयोग होता था अब जब से देष में वैष्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, विदेशीकरण, बाजारीकरण एवं विनिमय की नीतियों ने अपना स्थान लिया, तभी से देश में घोटालों की बाढ़ सी आ गयी है। इन्हीं के साथ–साथ पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण करते–करते बाजारवाद, भोगवाद, विलासिता आदि का जबरदस्त हमला शुरू हो गया। भ्रष्टाचार से देश की अर्थ व्यवस्था पर और यहां के प्रत्येक नागरिक पर इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है। भारत की राजनीति व नौकरशाही का भ्रष्टाचार तो बहुत ही व्यापक है। इसके अतिरिक्त न्यायपालिका, मीडिया, सेना, पुलिस आदि में भी भ्रष्टाचार लिप्त है। विश्व बैंक संस्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार की निम्नांकित रूपों में वर्गीकृत किया हैः–

1. प्रशासनिक भ्रष्टाचार –सर्वाधिक प्रवर्तित इस श्रेणी में लोकनीति, नियमों तथा प्रक्रियाओं में हेर–फेर करके किसी को अवैध लाभ पहुँचाया जाता है।
2. राजनैतिक भ्रश्टाचार–वोट खरीदने से लेकर नीति एवं कानून के निर्माण एवं क्रियान्वयन तक में सम्मिलित राजनीतिक दलों द्वारा किया जाने वाला भ्रष्टाचार।
3. लोक भ्रष्टाचार–जनता की सुविधा के लिए बनाये गये संगठनों का इस्तेमाल निजी लाभ के लिए करने की स्थिति लोक भ्रश्टाचार है। इसमें लोक सेवक घूँस या रिष्वत लेकर अवैध लाभ पहुँचाते हैं।
4. निजी भ्रष्टाचार–व्यक्तिगत स्तर पर किये जाने वाले भ्रष्टाचार को इस श्रेणी में लिया गया है। माफिया द्वारा स्थानीय व्यक्तियों या व्यापारियों से पैसे ऐंठने इसी में आता है।
5. वष्हद भ्रष्टाचार–उच्च अधिकारियों के स्तर पर पैसे का भारी लेन–देन इसमें षामिल है।
6. लघु भ्रष्टाचार कम पैसे लेकर छोटे–कर्मियों द्वारा किया जाने वाला भ्रष्टाचार जिसका आम जनता से ज्यादा सम्पर्क होता है।

आज भ्रष्टाचार ही देश की सबसे बड़ी सरकार बन चुकी है। देश पर किसी भी समस्या का इतना दबाव

नहीं है, जितना भ्रष्टाचार का है। लोग अब भ्रश्टाचार को अपने निर्यात और जीवन के अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। इसलिए तो इसे आज सामाजिक मान्यता हासिल हो चुकी है। सन् 2005 में भारत में ट्रांसपेरेन्सी इन्टरनेषनल नामक एक संस्था द्वारा किये एक अध्ययन में पाया गया कि 62 प्रतिशत से अधिक भारतवासियों को सरकारी कार्यालयों मे अपना काम करवाने के लिए रिष्वत या ऊँचे दर्जे का प्रभाव का प्रयोग करना पड़ा। वर्श सन् 2008 में पेष हुई रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 20 करोड़ की रिष्वत अलग–अलग लोक सेवकों को (जिससे न्यायिक सेवा के लोग भी षामिल हैं) दी जाती है। इसीलिए जब हम किसी मन्त्री या अफसर से मिलने की कोशिश करते हैं तो इनके दरवाजे पर जितने भी लोग बैठे होते है कि वहां भ्रष्टाचार पनपता है और उसकी षुरूआत होती है। सरकारी नौकरी की दी जाने वाली कम तनख्वाह से, लेकिन अब भ्रष्टाचार हमारे तंत्र का जरूरी हिस्सा बन गया है। ऊपर से नीचे तक सभी भ्रष्टाचार को अपनी षान समझते हैं। मिसाल के तौर पर पहचान प्रमाण पत्र, जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, पासपोर्ट, जाति प्रमाण पत्र इत्यादि बनवाने सम्बन्धित अधिकारियों को कर्मचारियों को घूस खिलानी पडती हैं, आपको कितनी रकम चुकानी है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी मोल–भाव करने की क्षमता इतनी है कि या वह काम आपके लिए कितना जरूरी है, जिसे करवाने के लिए आपको रिष्वत देने को मजबूर होना पड़ रहा है। काम अगर छोटा है तो 100/– रू0 में बात बन जायेगी। बडा काम है तो उसकी कोई सीमा नहीं। नवम्बर 2010 में आयी ग्लोबल फाइनेंषियल इंटिग्रिटी की एक रिपोर्ट के मुताबिक आजादी के बाद से भारत में अब तक 462 अरब डालर की आर्थिक अनियमिततायें हुई है जिनमें ज्यादातर का कारण था भ्रष्टाचार। जब भ्रष्टाचार से प्राप्त अकूत सम्पदा का रूप ले लेती है तो इन्हें विदेशों मे उन जगहों पर भेज दिया जाता है जहां कर के रूप में न्यूनतम राषि छिपानी होती है इन्हें टैक्स हैवन कहा जाता है। भ्रश्टाचार के कारण आम आदमी तक वैष्वीकरण का लाभ नहीं पहुंच पा रहा है। वास्तव में भ्रष्टाचार न केवल हमारे मौजूदा लाभ को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि वह देश के नौजवानों के भविष्य की सम्भावनाओं को भी क्षति पहुंचा रहा है। उदाहरण के रूप में हम देखें तो बोफोर्स घोटाला 600 करोड़, चारा घोटाला 950 करोड़, मधु कोड़ा मामला 4000 करोड़, सत्यम घोटाला 14000 करोड़, ताज गलियारा 175 करोड़, तेलगी कांड 20000 करोड़, हर्शद मेहता घोटाला, आदर्श सोसायटी घोटाला, कर्नाटक का भूमि घोटाला आदि। न जाने कितनी ही करोड़ों–अरबों रूपयों के घोटाले निरन्तर हो रह हैं तथा और न जाने कितने सामने आने को बेताब होंगे। सारे विष्व में भारत में प्रचलित भ्रश्टाचार का डंका इतनी तेजी से तथा विस्तार से कभी नहीं बजा, जितना इस बार कॉमनवेल्थ खेलों के पहले बजा है। इसके बाद से तो घोटालों की बाढ सी आ गयी है। यह अब किसी कार्यक्षेत्र या विभाग की समस्या नहीं है, बल्कि राश्ट्रीय समस्या है।

भारत की प्रमुख आर्थिक घोटाले–

- बोफोर्स घोटाला – 65 करोड़ रूपये
- यूरिया घोटाला – 133 करोड़ रूपये
- चारा घोटाला – 950 करोड़ रूपये
- षेयर बाजार घोटाला – 4000 करोड़ रूपये

- सत्यम घोटाला – 7000 करोड़ रूपये
- स्टैम्प पेपर घोटाला – 43 हजार करोड़ रूपये
- कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला – 70 हजार करोड़ रूपये
- 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाला – 1 लाख 67 करोड़ रूपये
- अनाज घोटाला – 2 लाख करोड़ रूपये (अनुमानित)
- कोयला खदान आवंटन घोटाला – 192 लाख करोड़ रूपये

पिछले वर्शों से नजर डालें तो इन बड़े–बड़े घपलों में कारपोरेट जगत का नया स्वरूप सामने आया है। जिसमें भारत में सबसे बड़ा घोटाला किया है। भारत में नेताओं, कारपोरेट जगत के बड़े–बड़े डद्योगपति तथा बिल्डरों ने सारी सम्पत्ति पर कब्जा करने के लिए आपस में गठजोड़ कर रखा है। इस गठजोड़ में नौकरषाही के षामिल होने, न्यायपालिका की लचर व्यवस्था तथा भ्रश्ट होने के कारण देष के सारी सम्पदा यह गठजोड़ सुनियोजित रूप से लूट कर अरबपति, खरबपति बन गया है। देष में आदर्ष सोसायटी घोटाला, 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला और कोयला आवंटन घोटाला आदि देश के वो घोटालें है जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है, कि भ्रष्टाचार की जड़े कितनी मजबूत हो गयी है।

समकालीन भ्रष्टाचार विरोधी–

इंडिया अगेन्स्ट करप्षन, जनलोकपाल, विधेयक, आन्दोलन 2011, अन्ना हजारे, अरविन्द केजरीवाल, किरन बेदी, बाबा रामदेव, सुब्रह्मण्यम स्वामी आदि।

सन्दर्भ सूची–

1- http://hi.wikipedia.org/s/1k6, भारत के भ्रश्टाचार का विकास
2. मानचन्द खंडेला, भारतीय राजनीति का बदलता परिदष्य
3. श्रीराम माहेष्वरी, भारतीय प्रषासन, ओरियन्ट लांगमैन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011
4. सुरेन्द्र कटारिया, भारतीय लोक प्रषासन, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, जयपुर, 2011
5. प्रो0 लक्ष्मीनारायण नाथ का, भ्रश्टाचार अर्थ षास्त्र–भारतीय संदर्भ में, प्रतियोगिता दृश्टि, जून 2011
6. द्वितीय प्रषासनिक सुधार आयोग (चौथा प्रतिवेदन–षासन में नैतिकता) फरवरी, 2007
7. एन0 विट्ठल, भ्रश्टाचार का महोत्सव, दैनिक भास्कर, जयपुर, रविवार, 5 दिसम्बर 2010
8. डॉ0 एस0के0 अग्रवाल, बदलते भारत के ओपन फैक्टस, हिन्दुस्तान, नई दिल्ली, सोमवार, अक्टूबर 2007
9. जोगिन्दर सिंह, बर्बाद ब्यूरोक्रेसी। दैनिक भास्कर, जयपुर रविवार, 7 मार्च, 2010
10. राजदीप सरदेसाई भ्रश्टाचार का कॉनवैल्थ, दैनिक भास्कर, जयपुर, गुरूवार, 10 फरवरी 2010